झाबुआ जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम

हेतु

मानव - संचेतनावादी

शिक्षा - संस्कार

का

पाठ्यक्रम

प्रस्ताव

झाबुआ जिलें में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम हेतु पाठ्यक्रम में संशोधन एवं परिवर्धन हेतु प्रस्ताव

मानव स्वभाव से ही सुखाकांक्षी है । वह न्याय पाना और देना चाहता है । अतः एक सर्वसुख व न्याय सुलभ मानवीय व्यवस्था की कामना करता रहा, परन्तु आज हम जिस स्थिति में खड़े है , वहां से लगता है कि दुख ही शायद मानव की नियति है अज्ञान और भटकाव से बाहर निकलने का कोई मार्ग नज़र नही आता ।

मात्र शिक्षा ही इस भटकाव से मनुष्य को बाहर निकाल सकती है । जीवन विद्या समिति ने जीवन से अस्तित्व समग्र की मूलभूत समझ के आधार पर एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था को विकसित करने का कार्य प्रारम्भ किया है जिससे अल्प अवधि में लोगों में यह विश्वास पैदा करना शुरू कर दिया है जिसमें सह अस्तित्व के द्वारा समाधान, समृद्धि एवं अभय को प्राप्त किया जा सकता है और निरन्तर सुख प्राप्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है । इसी के आधार पर स्वायत्त परिवार, स्वायत समाज, स्वायत ग्राम तथा स्वायत राष्ट्र के द्वारा एक अखंड समाज और सार्वभौगिक व्यवस्था मानव स्वभाव के अनुकूल और सहज है इसीलिये इसे समझना और समझाना आसान है। व्यवस्था सुखकारी है अतः अपने आयको इसके अनुरूप ढालने की प्रवृत्ति स्वतः स्फूर्त होती है परन्तु यह तभी संभव है जब इस व्यवस्था के मूलतत्व की सही समझ हो, बुद्धि के स्तर पर भी और अनुभव के स्तर पर भी ।

प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही 1- सत्य वक्ता होता है, परन्तु उसे सत्य बोध नही होता। 2- न्याय करना और पाना चाहता है परन्तु वह न्याय प्रदायी योग्यता नही रखता और 3- सही कार्य व्यवहार करना चाहता है परन्तु सही गलत का निर्णय नही कर पाता । यही अयोग्यतायें दुख और असामाजिकता का कारण बन जाती है ।

इन जन्मजात अयोग्यताओं को पूरा करने की योग्यता प्रदान करना समाज का दायित्व है समाज के चार महत्वपूर्ण अंगो- परिवार, शिक्षा व्यवस्था, धर्म और राज्य का यह दायित्व है कि वे मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करें। आज एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो मानव संचेतना व मानवीय शिक्षा संस्कार के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति में :-

1- स्वयं में समझदारी 2- व्यवहार में सामाजिकता और व्यवसाय में स्वावलम्बन पैदा करें।

----2

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

यह परिवर्तन शिक्षा की विषयवस्तु अध्ययन अध्यापन विधि एवं मूल्यांकन पद्धति में अपेक्षित वस्तुओं (स्वयं परिवार, समाज और प्रकृति की अस्तित्व सहज व्यवस्था (के समावेश से ही संभव है ।

5-6 वर्ष के बच्चे जब विद्यालय में आते है तो वे भाषा बोलना जानते है, सामान्य बातों का अर्थ समझना, अपने आस पास , घर, खेत आदि पर्यावरण को पहचानते है व मौखिक रूप से काफी सीख, समझ और अभिव्यक्त कर लेते है।

सीखना और पढ़ना एक कला है । समझदारी के साथ इसका सदुपयोग अन्यथा दुरूपयोग होता है। लिखना और पढ़ना अपने आप में समझदारी नही है। प्रचलित पद्धति में बालको को मौखिक कलाओं के साथ उन्हें लिखना पढ़ना भी सिखाया जाता है। मूल्यांकन करते समय भी इन्ही कलाओं को परखा जाता है ।

शिक्षा का मूल उददेश्य व्यक्ति को समझदार बनाना समझदारी के लिये अस्तित्व समझ/प्रकृतिसहज और मानवसहज वास्तविकता (व्यवस्था (को उसके सही रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिये । कलाओं को इस प्रकार सिखाया जाना चाहिये कि बालक, जीवन, सम्बन्ध, मूल्यों परिवार, समाज तथा प्रकृति के प्रति जागृत होता चला जाये। परस्पर पूरकता की वास्तविकता को समझकर उसका निर्वाह करने की क्षमता विकसित होती रहे। इस कार्य के लिये शिक्षक को प्राथमिकता से मैत्रीपूर्वक प्रस्तुत होना पड़ता है विश्वास, स्नेह, ममता, वात्सल्य के माध्यम से बालक में भी विश्वास, अभय और उत्साह जागृत होता जाता है । युवास्था आते आते मनुष्य में समाधान, अभय और सस्अस्तित्व के साथ साथ समृद्धि के लिये उत्पादन विनियम और सदुपयोग पूर्वक स्पष्ट कार्यक्रम होता है यही शिक्षा की पूर्णता है ।

झाबुआ जिलें में जीवन विद्या प्रतिष्ठान के सहयोग से प्रयोग करके ऐसी शिक्षा व्यवस्था की प्राथमिक स्वीकृति प्राप्त कर ली गयी है जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में प्रस्ताव की रूपरेखा केन्द्र शासन के प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत करते समय हमारा विश्वास और भी दृढ़ हुआ है । प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में समेकित मानवीय शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम संशोधन एवं परिवर्धन हेतु जिले के पास पर्याप्त संसाधन एवं श्रोत उपलब्ध है ।

मैं अपनी ओर से उपरोक्त कार्यक्रम हेतु पाठ्यक्रम संशोधन एवं परिवर्धन की स्वीकृति हेतु अनुशंसा करता हूं।

(मनोज सालानी (
आई.ए.एस. कलेक्टर झाबुआ,म0प्र0

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा-1

भूमिका :

प्रत्येक बालक में अनुसरण, आज्ञा पालन एवं सहयोग की प्रवृति होती है । शिक्षक इसको अच्छी तरह समझकर बालक के सम्मुख प्रस्तुत होता है तो बालक अपना लक्ष्य सहजता से प्राप्त कर लेता है ।

लक्ष्य :

1- विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति निष्ठा, शिक्षा के प्रति जिज्ञासा एवं गुरू के प्रति कृतज्ञता उत्पन्न हो ।

2- शरीर के अंग प्रत्येक की समझ उनके कार्य और उनसे तालमेल की समझ विकसित हो।

3- शरीर तथा जीवन का सम्बन्ध और उनमें सह अस्तित्व का ज्ञान होना ।

4- जीवन शक्तियों की पहचान होना (जैसे, मैं आशा करता हूं, इच्छा करता हूं आदि) ।

5- स्वच्छता (शरीर, वस्त्र, घर, विद्यालय के के संदर्भ में ।

6- विद्यालय में कापी, बस्ता आदि निजी सामग्री का रख रखाव करना ।

7- अक्षर - बोध ।

8- अंक - बोध ।

9- सम्बन्धों, सम्बोधनों की पहचान मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, कथनी करनी की एक रूपता।

वस्तु :

1- विद्यालय में प्रवेश पाया हुआ विद्यार्थी विद्यालय को परिवार के रूप में तथा गुरू को सम्बन्धी के रूप में पहचाने, इसके लिये संपूर्ण प्रणाली एवं नीति का उपयोगशाला परिवार करेगा ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

2- आसन उचित बैठने का अभ्यास । विभिन्न अंग प्रत्यंग से परिचित कराना प्यार स्नेह और विश्वास को शरीर के माध्यम से व्यक्त करना ।

3- व्यायाम, खेल, विभिन्न अंगों की पुष्टि विकास एवं तालमेल (उपयोगिता के अर्थ में बनाये रखने हेतु शरीर में स्वास्थ्य की दृष्टि से ।

4- जीवन शक्तियों, सम्बन्धों की पहचान और उनका बोद्ध कराना । (आशा, विचार,इच्छा) ।

5- वस्तुओं की पहचान तथा उनके उपयोग का बोध कराना ।

6- शरीर, उसकी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का ज्ञान ।

7- अक्षर अभ्यास, शब्दों को लिखने का अभ्यास, कविता के माध्यम से, शरीर अवश्य मानवीय गुण, स्वभाव सम्बन्धी कर्तव्य, एवं दायित्व, आवश्कयता, उपयोगिता एवं प्रयोगवादी शब्दों के माध्यम से जैसे अम्मा, आशा, आंख आदि ।

8- अंक बोध हर गणना को वस्तु मूलक आधार पर सम्पन्न कराना ।

9- एक से 100 तक लिखना, पढ़ना, बोलना, शरीर, इन्द्रियों सम्बन्ध सहित संख्या - बोध।

शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय :

1- आज्ञा पालन एवं प्रोत्साहन ।

2- सम्बन्धी के रूप में प्रस्तुत होकर ममता, वात्सल्य के साथ ।

3- मौखिक अभिव्यक्ति एवं शरीर के हाव भाव के साथ अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान ।

4- परिवार में आज्ञा पालन, सम्मान में आज्ञा पालन, अनुसरण एवं सहयोग के अर्थ में जीने का अभ्यास कर ।

5- कक्षा स्थली श्यामपट, स्लेट आदि साधनों से/संभाषण गीत, कविता, चित्रों, हानियों आदि को पूर्णतया विश्वास विधि से बच्चों में शिक्षा को अर्पित करना ।

समय : 40 सप्ताह, शिक्षा कक्षा में 2 घंटे । खेल मैदान में 3 घंटे ।

खेल : स्वास्थ्यवर्धक, मैत्री (सहयोग एवं ज्ञानवर्धक (

मूल्यांकन अपने साधनों (शरीर,वस्त्र,पुस्तक आदि (की स्वच्छता सुरक्षा एवं सदुपयोग उठना बैठना बोलना आदि ।

सहयोग,आज्ञापालन एवं अनुसरण आदि की प्रवृत्ति का मूल्यांकन ।

www.madhyasth-darshan.info Information Portal

कक्षा - 2

1- **भूमिका :** पहली कक्षा में बालक विद्यालय को परिवार के रूप में स्वीकार करता है, शिक्षकों के स्नेह को पाकर उत्सवित होता है शिक्षा का सारा कार्यक्रम उसके लिये सुखप्रद हो जाता है पहली कक्षा के वातावरण फल स्वरूप विद्यार्थी में विश्वास उदय होता है यह विद्यार्थी को विद्या का पात्र बना देता है ।

2-**लक्ष्य :** प्रत्येक विद्यार्थी को समाधानित ﴾ समझदार ﴿ व्यवस्था में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वभावलम्बी प्रमाणित करना है जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है इसके लिये :-

1- संबंधों के प्रति जिज्ञासा, परिवार के प्रति निष्ठा जागृत करना।

2- शरीर और जीवन के सह अस्तित्व के प्रति जागृत करना ।

3- मैं विचार करता हूं, आशा करता हूं, इस तथ्य को अवगत कराना ﴾ जीवन शक्तियों के अर्थ में ﴿ ।

4- कक्षा में परिवार संबंधी के साथ संबोधन ।

5- आज्ञापालन में तत्परता ।

6- विद्यालय परिवार के प्रति गौरव, विद्या के प्रति जिज्ञासा एवं निष्ठा, गुरूओं, के प्रति विश्वास ।

7- संबंधों की पहचान मूल्यों का निर्वाह एवं मूल्यांकन ।

8- वस्तु बोध, स्थान बोध, स्थानीय उत्पादन कार्यो का परिचय, उत्पादित वस्तु के स्वरूप का बोध उसकी उपयोगिता के आधार पर ।

3- **वस्तुः**

1- धीरता, वीरता, उदारता को दृढ़ करने का पाठ ।

2- पाठशाला परिवार के साथ मैत्री की घनिष्ठता एवं विश्वास को स्थापित करने का पाठ ।

3- कक्षा में सफाई स्वास्थ्य का पाठ ।

4- जीवन के क्रिया स्वरूप पर पाठ ।

5- परिवार के संबंधों पर पाठ ।

6- स्थानीय उत्पादन कार्यो एवं उत्पादित स्वरूप ﴾ उपयोगिता के आर्थ में ﴿ पर पाठ ।

7- व्यवस्थित दिनचर्या पर पाठ ।

8- आसन व्यायाम, खेल

शब्द बोध :

शब्दों के अर्थ खोजना, सही उच्चारण सही लिखना सही पढ़ना शब्दां को जोड़ना, अभ्यास बनाना, मात्राओं का बोध, सार्थकता व्यर्थता की समीक्षा सम्बन्धों में वर्तने वाले चरित्र रूपी पाठ।

अंक बोध :

गणित 1 से 100 तक आदान प्रदान करना समय नाप तौल आकार प्रकार की पहिचान दिया बोध ।

पाठ्य सामाजिकता की पहिचान उसकी उपयोगिता का बोध धीरे धीरे पौधों की पहिचान उनका सामान्य उपयोग उसी के साथ संख्या विस्तार ।

4- शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय :

1- आज्ञापालन एवं प्रोत्साहन ।

2- जीवन की रौशनी में ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में संचालन विधि पर ध्यान ।

3- सम्बन्ध मूल्य, मूल्यांकन, व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी की निष्ठा एवं निरन्तरता कक्षा स्थली श्यामपट, स्लेट, आदि कहानी से विद्यार्थियों में स्वयंस्फूर्त कविता, गीत एवं संभाषण करना एवं कराना ।

4- पर्यावरण से वनस्पतियों आदि का ज्ञान कराना ।

5- समय : 40 सप्ताह, ॥ कक्षा में 3 घंटे, खेल मैदान 2 घंटे । ॥

6- खेल: परस्पर मैत्री एवं विश्वास निर्वाह एवं स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति के लिये ।

7-मूल्यांकन: शब्दों एवं अर्थो के सम्बन्ध की पहचान कराना मूल्यांकन वस्तु में अर्थ होने की समझ कराना ।॥ मात्राओं, शुद्ध लेखन, शुद्ध वाचन, शुद्ध बोलना, आदि का मूल्यांकन कराना ।

सहयोग- आज्ञापालन, अनुकरण की ग्राहयता का मूल्यांकन ।

पुस्तक- सामग्री, स्थान की सुरक्षा स्वच्छता सुदपयोग का मूल्यांकन ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कक्षा- 3

1-भूमिका :

बालक में गुरू के प्रति सहज् श्रद्धा का भाव उदय होता है । शिक्षक स्नेह वात्सल्य एवं विश्वास के साथ बालक के सम्मुख प्रस्तुत होता है और बालक का पूरक बन जाता है इस तरह विद्या सम्बन्धों में बहती है ।

2- लक्ष्य :

1- बालक को न्याय प्रदत्त/क्षमता से संपन्न कराना ।

2- सत्य का बोध कराना ।

3- सही कार्य व व्यवहार कराना ।

अर्थात प्रत्येक विद्यार्थी को विचार के समाधानित, व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी प्रमाणित कराना जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है। इसके लिये -

1- जीवन के चित्रण पर बल ।

2- संबंधों,मूल्यों एवं परिवार का अर्थ स्पष्ट करना ।

3- मनुष्य, मनुष्य के बीच सह अस्तित्व का बोध कराना ।

4- मनुष्य - शेष प्रकृति के बीच सह अस्तित्व का बोध कराना ।

5- कक्षा साथियों में विश्वास स्थापित करना ।

6- स्वच्छता का स्वयं ध्यान रखना ।

7- जीवन ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान का आधार है ।

8- नाम, संस्कार का बोध, स्वरूप प्रयोजन ।

9- समाज का अध्ययन ।

10- अक्षर तथा अंक बोध ।

11- खेल तथा व्यायाम ।

3- वस्तु :

1- जीवन के स्वरूप के अध्ययन का पाठ ।

2- संबंध एवं मूल्य का पाठ ।

3- कर्तव्य एवं दायित्व का पाठ ।

4- स्वयं कक्षा विद्यालय एवं घर की सफाई का पाठ ।

5- परिवार पर पाठ ।

6- समाज में परस्परता पर पाठ ।

7- समाज के विभिनन स्तर व्यक्ति, परिवार, ग्राम क्षेत्र, मंडल, राज्य राष्ट्र की जानकारी व प्रतिनिधित्व की समझ ।

8- मनुष्य के साथ प्रकृति की पूरकता का पाठ ।

9- आसन व्यायाम, व खेल ।

10- भाषा बोध :

शब्दो का जोड़ना, लिखना पढ़ना । वाक्य रचना, स्वयं लिखकर व्यक्त होना, कविता, गीत,निबन्ध,कहानी और पत्रों के माध्यम से व्यक्त होना। स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास मैत्री व्यवहारकारी वाक्य कराना ।

11- गणित :

परिवार में सामान्य आदान प्रदान जोड़ घटाना गुणा, पहाड़े । संख्या की सार्थकता का बोध। माप तौल (हर वस्तु अपने में सम्पूर्ण है घटाने से घटती है बढ़ाने से बढ़ती नही इस सूत्र का अध्ययन भुगोल, संस्कृति, आहार, आवास, अलंकार, घर की रचना, सामान्य मानचित्र आदि) ।

12- स्थानीय औषधियों (वनस्पतियों) की पहचान एवं उपयोग जीव जन्तुओं पक्षियों आदि की पहचान एवं उपयोग, धरती में फसल के साथ अन्य हरियाली की पूरकता का बोध। धरती पर हर वस्तु परस्पर पूरक में और मनुष्य के सुख के अर्थ में सजी हुयी है इसका बोध कराना ।

13- भाई, बहिन, साथियों के साथ विश्वास मूल्य का निर्वाह माता पिता गुरू के साथ कृतज्ञता मूल्य का निर्वाह करना ।

14- गांव की संस्कृति, लोक गीत, लोक नृत्य, जल श्रोत, फसलों की किस्में, स्थानीय निकट मंडी । (मूलतः सह अस्तित्व की ओर दिशा रहेगी) ।

---9

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

4- शिक्षा विधि : पूर्ववत रहेगी ।

5-समय : 40 सप्ताह, कक्षा में 3 घंटे, खेल मैदान में 2 घंटे ।

6- खेल : पूर्ववत्

7-मूल्यांकन ग्राहयता का मूल्यांकन ।

- किताब कापी तथा अन्य सामग्री का रख रखाव ।

शाला, खेल के मैदान एवं घर में व्यवहार ।

- शुद्ध लेकन पाठन, वाचन का मूल्यांकन ।
- सामाजिक विज्ञान के अन्र्तगत मूल्यांकन ।
- वस्तुयें सामग्री वस्त्र, अलंकार क्रय सदुपयोग और सुरक्षा ।
- आज्ञा पालन, सहयोग एवं अनुकरण का मूल्यांकन ।
- गणितीय क्रियाओं का मूल्यांकन ।

कक्षा-4

1- भूमिका :

पूर्व की कक्षाओं की वस्तु विधि के प्रभाव में स्वयं स्फूर्त परिवार की आवश्यकता, अनिवार्यता बालक की समझ में आने लगती है न्याय भी आवश्यकता बालक में प्रमाणित होने लगती है ।

2- लक्ष्य :

प्रत्येक विद्यार्थी को व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी प्रमाणित करना है। इसके लिये :-

1- चिन्तन आग्रत करना अर्थात न्याय की दृष्टि से व्यवहार होने लगे ।
2- नैसर्गिकता के प्रति जागृत करना ।
3- सम्बन्धों की पहिचान एवं मूल्यों का निर्वाह।
4- स्वच्छता, सफाई, एवं व्यवस्था को बनाये रखना ।
5- आचरण में शिष्ट मूल्यों का प्रवाह ।
6- परिवार परिवार के बीच सह अस्तित्व ।
7- प्रकृति की अन्य इकाइयों के साथ परस्परता ।

3- वस्तु :

1- मूल्यों का पाठ ।
2- नैसर्गिकता का पाठ ।
3- स्वच्छता सफाई एवं व्यवस्था का पाठ ।
4- संबंधों में निहित अपेक्षाओं का पाठ ।
5- परिवार परिवार के सह अस्तित्व का पाठ ।
6- परिस्थितियों के मूल्यांकन एवं प्रस्तुति का पाठ ।
7- मूल्य - चरित्र और नैतिकता का अविभाज्यता का पाठ ।

4- भाषा :

निबन्ध, कविता, गीत, कहानी, लेख की रचना कराना स्थानीय वर्णन, घटना वर्णन, स्मृति वर्णन, सम्बन्धों की अभिव्यक्ति वर्णन, परिवार में, गांव में मैसर्गिक सम्बन्धों का वर्णन, चित्रण ।

10- गणित :

आकार, आयतन, धन, 20 तक पहाड़े, मिलाना घटाना और बांटना दशमलव एक लाख तक की संख्या गुणा, भाग, मिश्र से क्रियाओं जलेम नियम का प्रयोग परिकिति समय मापन नाप तौल, वस्तुओं, कोणों, के आधार पर गणित, विम्ब का प्रतिबिम्बन बोध मानचित्र आकंलन बोध ।

11- भुगोल (सामाजिक विज्ञान) :

विद्यालय व गांव का मानचित्र (बनाने की प्रवृति का प्रोत्साहन, परिचय) मिटटी, समीचीन वनस्पतियों की पहचान व औषधिय अनुप्रयोग ।

12- पूरकता की पहचान धरती उर्वरक विधि मनुष्य के स्वास्थ्य रहने की सामन्य विधि स्वास्थ्य स्वच्छ रहने का बोध । मानव में सह अस्तित्व नैसर्गिकता में सहअस्तित्व का बोध। प्रमाण प्रवृत्ति ।

13- मूल्य, विश्वास, कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन का बोध, विधि और क्रियान्वयन ।

14- पदार्थावस्था, गुणवस्था, सम्बन्धी पाठ हमारा भोज वायु, जल, मौसम, मिटटी और फसलें, फल, कार्य,पृथ्वी, आदि ।

15- स्थानीय इतिहास, लोक संस्कृति का अध्ययन ।

4-विधि : पूर्ववत ।

5-समय : पूर्ववत।

6- खेलः पूर्ववत।

7- मूल्यांकनः

व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी की ग्राहयता का मूल्यांकन, सामग्रियों की स्वच्छता सुरक्षा एवं सदुपयो हेतु कार्यो का मूल्यांकन, सामाजिकता का मूल्यांकन, विद्यालय में खेल के मैदान पर घर में, समाज में ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कक्षा-5

1- भूमिका :

बालक में जीवन की शक्तियां जागृत होने लगती है । चिन्तन के फलस्वरूप बालक मूल्यांकन करने योग्य बनने के क्रम में दिखाई पड़ता है स्वयं में सुखी तथा सुख का श्रोत बनने की बात भी यही से शुरू होती है । जागृति क्रम में जीवनी क्रम परिष्करण और चिन्तन जागृति से दृष्टा पद की ओर गति होती है ।

2- लक्ष्य :

प्रत्येक विद्यार्थी को व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी प्रमाणित करना है उसके लिये :-

1- न्याय की दृष्टि के आधार पर अपने कार्य व्यवहार करना ।

2- प्रयोजन के साथ जीने का अभ्यास ।

3- मानवीय लक्ष्य स्वानुशासन और स्वराज्य की स्वीकृति ।

4- समझदारी के क्रम में घर में विद्यालय में, गांव में, अपनी भागीदारी को स्पष्ट करवाना।

5- परिवार और समाज की समझ ।

6- जीवन में चिन्तन और बोध शक्तियों की जागृति ।

7- आसन, व्यायाम, खेल आदि से शरीर को स्वस्थ रखने पर बल ।

3- वस्तु :

1- परिवार की अवधारणा का पाठ ।

2- जीवन के तात्विक स्वरूप की झलक का पाठ

3- जीवन के कर्ता, दृष्टा, भोक्ता होने संबंधी पाठ ।

4- इस प्रकार की पाठ्य रचना जिससे प्रयोजन का अभ्यास हो ।

5- संबंध मूल्क कर्तव्य, दायित्व आदि से संबंधित पाठ ।

-----13

6- भाषा :

व्याकरण सहित भाषा 〔 संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी के प्रचलित रूढ़िवादी 〕 कारण, मूल, गणित 〔 〕 का अध्ययन निबन्ध पत्र लेखन, सम्भाषण अनुस्मरण वृत्तांत कहानी गीत कविता आदि भाषा विद्याओं का प्रयोग ।

7- गणित :

प्रत्येक इकाई अनन्त कोण सम्पन्न है इस सिद्धांत में जागृत करना गणित आंखों से अधिक समझ से कम होता है इस तथ्य को हृदयंगम कराना बीज गणित, रेखा गणित तथा व्यवहारिक गणित का अध्ययन 〔 वस्तुओं के आधार पर 〕 ।

8- अस्तित्वदर्शन :

भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणि विज्ञान 〔 वनस्पति विज्ञान 〕 जीव विज्ञान, मानव शरीर विद्या का ज्ञान ।

9- जीवन विज्ञान 〔 मनो विज्ञान 〕 व जीवन के 122 आचरण : तालिका का बोध ।

10- सामाजिक विज्ञान 〔 भुगोल 〕 गांव, जिले, प्रदेश व देश :

से सम्बन्धित मानचित्रों का अध्ययन   विश्व के स्वरूप की झलक/प्रकृति का अध्ययन इतिहास नागरिक शास्त्र - मानवीय आचरण के आधार पर ।

विवरण :

सम्बन्धों में निष्ठा का बोध ।

सम्बन्ध को पहिचानने वाले जीवन का बोध ।

सम्बन्ध बोध की आवश्यकता उपयोगिता प्रयोजन ।

परिवार में प्रमाणित होने की संभावना का बोध ।

समझदारी की आवश्यकता ।

अस्तित्व में सह अस्तित्व का बोध ।

समझने वाली वस्तु जीवन ही है ।

जीवन और शरीर का संयुक्त रूप ही मानव है ।

मानव परम्परा का स्वरूप और प्रमाण ।

चारों अवस्थाओं में सहअस्तित्व ।

सहअस्तित्व विधि ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

व्यक्ति, परिवार, समाज में स्वायतत्

स्वायत्त ग्राम व्यवस्था का सामन्य स्वरूप

मानव की जल भूमि, वन संरक्षण की आवश्कता किये गये कार्य और क्या करना शेष है।

औषधियों और उनका सामान्य प्रयोग काल निबद्ध किया और क्रिया निबद्ध काल का बोध।

सम्बन्ध मूल्य, मूल्यांकन ।

प्रमाणों का सत्यापन (प्रमाण प्रवृत्ति)

परमाणु अणु, अणुरचितरचना ।

गठनशीलता, गठनपूर्णता।

4- शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय :

1- चिन्तन जागृति के क्रम में बालक मूल्यांकन योग्य होता है । यहीं से आशा से अनुशासन में संक्रमण की शुरूआत होती है ।

2- विद्यालय में न्याय का अवसर सुविधि एवं प्रोत्साहन ।

3- जीवन में जागृति क्रम में अभिव्यक्ति संप्रेषण एक प्रकायन के विभिनन अवसर प्रदान करना, मूल्यांकन क्षमता का जागृति में शिक्षक को सहायक बने रहने की जिम्मेदारी का बोध ।

6- भाषा :

व्याकरण सहित भाषा { संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी के प्रचलित रूढ़िवादी { कारण, गुण, गणित { { का अध्ययन निबन्ध पत्र लेखन, सम्भाषण अनुस्मरण वृत्तांत कहानी गीत कविता आदि भाषा विद्याओं का प्रयोग ।

7- गणित :

प्रत्येक इकाई अनन्त कोण सम्पन्न है इस सिद्धांत में जागृत करना गणित आंखों से अधिक समझ से कम होता है इस तथ्य को हृदयंगम कराना बीज गणित, रेखा गणित तथा व्यवहारिक गणित का अध्ययन { वस्तुओं के आधार पर { ।

8- अस्तित्वदर्शन :

भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणि विज्ञान { वनस्पति विज्ञान { जीव विज्ञान, मानव शरीर विद्या का ज्ञान ।

9- जीवन विज्ञान { मनो विज्ञान { व जीवन के 122 आचरण :

10- सामाजिक विज्ञान { भुगोल { गांव, जिले, प्रदेश व देश :

से सम्बन्धित मानचित्रों का अध्ययन विश्व के स्वरूप की झलक/प्रकृति का अध्ययन इतिहास नागरिक शास्त्र - मानवीय आचरण के आधार पर ।

विवरण :

सम्बन्धों में निष्ठा का बोध ।

सम्बन्ध को पहिचानने वाले जीवन का बोध ।

सम्बन्ध बोध की आवश्यकता उपयोगिता प्रयोजन ।

परिवार में प्रमाणित होने की संभावना का बोध ।

समझदारी की आवश्यकता ।

अस्तित्व में सह अस्तित्व का बोध ।

समझने वाली वस्तु जीवन ही है ।

जीवन और शरीर का संयुक्त रूप ही मानव है ।

मानव परम्परा का स्वरूप और प्रमाण ।

चारों अवस्थाओं में सहअस्तित्व ।

सहअस्तित्व विधि

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal